सर्वोदय दिन

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १२ सम्पादक – किशोरलाल मशरूवाला अंक ४७

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओ देसाओ
नवजीवन मुद्रणालय, कालुपुर, अहमदाबाद

अहमदाबाद, रविवार, ता० २३ जनवरी, १९४९

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४; डॉलर ३

सर्वोदय दिनके लिअे कांग्रेसका सन्देश

सर्वोदय दिन मनानेके लिअे कांग्रेस वर्किंग कमेटीने नीचेका सन्देश निकाला है :

"महात्मा गांधीके अवसानको लगभग पूरा अेक बरस बीत चुका है। अुनके श्राद्धका दिन — ३० जनवरी — सारे देशमें 'सर्वोदय दिन' के नामसे पवित्रताके साथ मनाया जाना चाहिये। वह दिन खास तौर पर गांधीजी और अुनके द्वारा जीवनभर सिखाये और अमल किये गये आदर्शोंके लिअे अर्पण किया जाना चाहिये। अुस दिन और दिनोंसे ज्यादा राष्ट्रका ध्यान गांधीजीके अुस महान सन्देशकी तरफ खींचना चाहिये, जिसमें अुन्होंने सत्य और अहिंसाके जरिये दुनियाके सारे स्त्री-पुरुषोंमें अेकता और सद्भावना कायम करनेकी बात कही है। ३० जनवरीका दिन गांधीजीकी पवित्र और अमर यादको शोभा देनेवाले प्रार्थनापूर्ण ढंगसे मनाया जाना चाहिये। अुसमें कताअी यज्ञ और समाज सेवाका काम भी शामिल करना चाहिये। आम सभायें भी की जा सकती हैं। अिन सभामें नीचेका सन्देश पढ़ा जाना चाहिये :

महात्मा गांधीको श्रद्धांजलि

"'अपनी पीढ़ी दर पीढ़ीसे लड़ी जाती रही आज़ादीकी लड़ाअीके लम्बे अितिहासमें हिन्दुस्तानने रंज और कामयाबी और बहुतसी हार-जीतोंका अनुभव किया। लेकिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधीकी सबसे अूँची नेतागिरीमें दुःखने लोगोंको शुद्ध और पवित्र बनानेका काम किया और हरअेक हारको दुगुनी कोशिशकी प्रेरणा और जीतके शगुनका रूप दे दिया गया।

"'हालके कुछ बरस देशके लिअे सख्त कसौटी और मुसीबतके साबित हुअे हैं। लेकिन गांधीजीके सन्देशने फिरसे राष्ट्रको प्रेरणा दी। अिन बरसोंमें कुछ हद तक हमें सिद्धि या कामयाबी मिली और हमने आज़ादी हासिल की, जिसके लिअे हमारे पहलेकी कअी पीढ़ियोंने लड़ाअी की थी और बड़ी बड़ी मुसीबतें सही थीं। लेकिन अुस आज़ादीकी हमें सचमुच बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ी, क्योंकि हमारी मातृभूमि (वतन) के दो टुकड़े हुअे और अिस कमनसीब बँटवारेके बाद देशके लोग पागल हो गये; और अुन तमाम बड़े बड़े आदर्शोंको कुछ समयके लिअे ग्रहण-सा लग गया, जिनके गांधीजी प्रतीक (निशानी) थे। लेकिन गांधीजीके हिम्मत बढ़ानेवाले अेकता और सद्भावनाके सन्देशने अुस अँधेरेको चमका दिया, और रंजसे भरे बेशुमार दिलोंको अुससे हिम्मत बँधी और शान्ति मिली।

"सबसे बड़ी चोट"

"'अुसके बाद राष्ट्र पर सबसे बड़ी चोट की गअी — गांधीजीकी हत्या की गअी, जो प्रेम और हिन्दुस्तानकी सौम्य व कभी न जीती जा सकनेवाली आत्माकी जीती-जागती मूर्ति थे। अिस तरह जिस सिद्धिके लिअे हिन्दुस्तानने बरसों कड़ी मेहनत की और जो अुसकी लम्बी लड़ाअीका शानदार नतीजा थी, वह अपने साथ आज़ादीकी चमक नहीं बल्कि रंज और निराशा ही लाअी।

"'देशने गांधीजीकी पवित्र और आदर भरी यादमें और अुनके अुपदेशोंमें श्रद्धा रखते हुअे अिन भयानक मुसीबतोंका सामना किया। अिनमें सबसे बड़ी मुसीबत आत्माके पतनकी थी, जो हिन्दुस्तानके मानस पर बादलकी तरह छा गअी थी और जिसके कारण वह अपने गुरुके सिखाये हुअे महान अुपदेशको थोड़े समयके लिअे भूल गया था।

"'जिन राष्ट्रपिताने देशको आज़ादी दिलाअी और अुसमें जान फूँकी, अुनके अवसानको अेक साल बीत चुका। अुनके अिस पहले श्राद्धके दिन हम अुस महान आत्माको और अुसके महान सन्देशको अपनी श्रद्धांजलि देते हैं और यह निश्चय करते हैं कि अुस जीवन देनेवाले सन्देशके मुताबिक हम हिन्दुस्तानकी जनता और मानवताकी सेवा करते रहेंगे।

"'गांधीजीकी नेतागिरीमें अहिंसक लड़ाअीके जरिये देशकी आज़ादी पा लेनेके बाद, अब हमें समाजी और माली आज़ादी पानेके लिअे कड़ी मेहनत करना है, ताकि जाति या धर्मका भेदभाव किये बिना हिन्दुस्तानके सब लोगोंको तरक्की करनेका अेकसा मौका मिले। अिस बड़े कामके लिअे नअी और निश्चित दृष्टिकी और रचनात्मक (तामीरी) भावनासे अपने आपको देशकी सेवामें अर्पण कर देनेकी जरूरत है।

"'हिन्दुस्तानके लोगोंने आज़ादी पा ली है, लेकिन अुसके मीठे फल चखनेके लिअे अुन्हें अपनी जिम्मेदारियाँ और फर्ज पूरे करने होंगे। हमें याद रखना चाहिये कि जनताकी सेवा करना और अिन जिम्मेदारियों और फर्जोंको पूरा करना हमारा सबसे अूँचा हक रहा है और आगे भी रहना चाहिये। और जो लोग ओहदे या सत्ताका लालच करते हैं, वे देशकी कुसेवा करते हैं।

नैतिक मूल्योंका सबक

"'गांधीजीकी यह खास सीख थी कि हमें अपनी सेवाको खास तौर पर हिन्दुस्तानके सब लोगोंमें अेकता और सद्भावना बढ़ाने, वर्गभेदों और पैदाअिश, जात-पाँत या धर्मके भेदोंको मिटाने और शान्तिपूर्ण ढंगसे वर्गविहीन (बगैर दरजेवाला) समाज कायम करनेमें लगाना चाहिये। अुनकी सबसे बड़ी यह सीख थी कि किसी भी कीमत पर और किसी भी हालतमें हमें नैतिक मूल्योंको नहीं छोड़ना चाहिये, जो जीवनको सार्थक बनाते हैं।

"'हम गांधीजीके अुस सन्देशके मुताबिक आजकी राष्ट्रीय और अन्तर-राष्ट्रीय मुसीबतों और आफतोंका पूरी अीमानदारीसे मुकाबला करनेकी कोशिश करेंगे, ताकि हिन्दुस्तान आज़ादीमें बढ़े और नैतिक दृष्टिसे अूँचा अुठे, और अिन बड़े मकसदोंके लिअे गांधीजी जिये और मरे वे पूरे हो सकें।'"

www.vinoba.in

वर्किंग कमेटीने यह भी फैसला किया कि ३० जनवरीको बुलाअी जानेवाली आम सभाओंमें यह सन्देश पढ़ा जाय, और अुस मौके पर दूसरे कोअी भाषण न दिये जायँ।

(अंग्रेजीसे)

रहबर

हम 'रहबर' अखबारकी ओर बालिगों (प्रौढ़ों)की तालीममें दिलचस्पी रखनेवाले भाअियों और बहनोंका ध्यान खींचना चाहते हैं। यह पन्द्रह रोजा परचा पिछले आठ सालसे मिसेज़ कुलसुम सयानीकी अदारतमें (सम्पादनमें) अन्जाम (सेवा) दे रहा है। यह अखबार माहवारी परचेकी सूरतमें सन् १९४० में शुरू किया गया था। बम्बअी सूबेमें बालिगोंकी तालीमकी हलचल (आन्दोलन) शुरू करते ही यह बात महसूस की गअी थी कि अिस किस्मका परचा निकाले बगैर आम लोगोंको तालीमकी जरूरत समझाना मुश्किल है। अिसके अलावा यह परचा निकालनेका मकसद मामूली पढ़े-लिखे और कम पढ़े-लिखे बालिगोंको पढ़ने लायक अच्छा मजमून (साहित्य) देना भी था। क्योंकि अुसके बगैर अिस हलचलका ज्यादा आगे बढ़ना मुश्किल था। चूँकि अिस परचेने अेक बड़ी जरूरतको पूरा किया, अिसलिअे यह अितना आम पसन्द (लोक प्रिय) हुआ कि शुरू करनेके चन्द हफ्तों बाद ही अिसे पन्द्रह रोजा कर दिया गया। और अब यह अेक ही बोलीमें लेकिन तीन लिखावटोंमें — यानी अुर्दू, नागरी और गुजरातीमें — छपता है। और अिस तरह अलग अलग अिलाकोंके काम करनेवालोंको अेक मिली जुली बिरादरीमें शामिल करता है। यह अखबार बालिगोंके लिअे काफी अच्छी किस्मकी फायदेमन्द बातें, हिन्दुस्तानी तारीख (अितिहास), संस्कृति (तमद्दुन), भूगोल (जुगराफिया) और आम जानकारी देनेवाले सवाल और खबरें वगैरा शाया करता है। फिर, अिसके लेख (मजमून) अिस कदर सादे और दिलचस्प ढंगसे पेश किये जाते हैं कि स्कूलोंके बच्चे और बच्चियाँ भी अिसे दिलचस्पीसे पढ़नेकी चीज़ समझते हैं। यह बात काफी तौर पर अिससे साबित होती है कि पाँच सौ प्रायमरी स्कूल अिसे मँगवाते हैं। प्रायमरी स्कूलोंको यह परचा मुफ्तमें देनेकी जो योजना बनी है, अुसके मातहत ये कापियाँ दी जाती हैं। अिसे बम्बअी सिटी अेडल्ट अेज्युकेशन कमेटी, प्राविन्शियल बोर्ड ऑफ अेडल्ट अेज्युकेशन और बम्बअी सरकारने भी पसन्द किया है, और अपना आश्रय दिया है।

अब तक यह काम मिसेज कुलसुम सयानीने खुद अपने शौकसे और अेक हद तक अपने खर्चसे बड़ी मेहनत करके चलाया। बम्बअी सरकार अिस सेवाकी कद्रके तौर पर सालाना पन्द्रह सौ रुपये देती रही। लेकिन साफ है कि अखबारको तीन लिखावटोंमें निकालनेके खर्चेको पूरा करनेके लिअे यह नाकाफी है। और चूँकि अिसने आठ सालकी लम्बी खिदमतसे अपनी जरूरत और खूबी मनवा ली है, अिसलिअे अब वह वक्त आ गया है कि अिसे पक्की बुनियाद पर खड़ा कर दिया जाय। हमारी रायमें अेक व्यक्ति (शख्स) अिस कामसे चाहे कितनी ही मोहब्बत क्यों न करता हो, बगैर मददके अिस बोझको हमेशा नहीं अुठा सकता। अदारती (सम्पादकी) कामके अलावा क़ौमी अहमियत रखनेवाले अैसे कामकी माली जिम्मेदारी भी अुसी पर डाल देना ठीक नहीं। अिस गरजसे हम तमाम दाताओंसे और अुन लोगोंसे भी, जो सूबे और मुल्ककी तालीमी तरक्की (शिक्षाकी अुन्नति) में दिलचस्पी रखते हैं, अिस अखबारकी माली हालतको मजबूत करनेके लिअे अुदारतासे मदद करनेकी अपील करते हैं, ताकि यह अखबार अपना खुदका अेक छोटासा प्रेस कायम कर सके, अपने फायदेमन्द शाखोंको बढ़ा सके और अपना सालाना नुकसान, जो करीब चार हजार रुपये होता है, पूरा कर सके। हमारी रायमें यह मदद दो तरीकोंसे दी जा सकती है: या तो अेक मुश्त सौ रुपयेकी रकम देकर अखबारके लाअिफ मेम्बर (आजीवन सदस्य) बनकर, या अैसे चन्द सालाना चन्दे देकर जिनसे यह अखबार स्कूलों या बालिगोंके तालीमी मरकजों (केन्द्रों)को मुफ्त भेजा जा सके। ये चन्दे या दानकी रकमें अिस पते पर भेजी जायँ: **मिसेज कुलसुम सयानी, रूपा विला, कम्बाला हिल, बम्बअी २६।** अिसके हर लिखावटके परचेका सालाना चन्दा तीन रुपया है।

हमें अुम्मीद है कि अिस अपीलका तमाम भाअी-बहन, जो तालीम और समाजकी भलाअीके कामोंसे दिलचस्पी रखते हैं, हमदर्दीसे जवाब देंगे।

अमृतकुँवर — बा० गं० खेर
काका कालेलकर — कि० घ० मशरूवाला
ज़ाकिर हुसैन — गुलजारीलाल नन्दा
ख्वाजा गुलाम सैयदन — (मिसेज़) पेरिन केप्टन
र० चौकसी — सैफ फैज़ तैयबजी

मद्रास सरकारकी हलकेवार विकास-योजना

जब यह मान लिया गया कि देहाती जीवनके हर पहलूको सुधारनेके कामको सरकारी कामोंमें पहली जगह देनेकी जरूरत है, तब यह हलकेवार विकास करनेकी योजना बनाअी गयी। आज अेक देहातीमें अपना और अपने आसपासके समाजका संगठन करने और अुसका विकास करनेका काम शुरू करनेकी वृत्ति ही नहीं रही है। अिसलिअे आज़ाद राष्ट्रके नागरिक होनेके नाते अुसके जो जो फर्ज और जिम्मेदारियाँ हैं, अुन सबके लिअे अुसे जाग्रत करना है। छोटासा भी काम, जो जरासे सहकारसे गाँवमें ही अच्छा और जल्दी हो सकता है, शुरू करनेके लिअे सरकारकी ओर देखनेकी अुसकी आदत पड़ गयी है। वह बदलनी है। अिसलिअे अिस योजनाका खास मकसद तो यह है कि देहातियोंमें किसी भी कामको शुरू करनेकी वृत्तिको अुकसाया जाय, जिससे वे खुदको स्वावलम्बी बनानेके लिअे अपने आर्थिक और सामाजिक जीवनका सहकारी ढंगसे संगठन कर सकें। अिसलिअे अिस योजनाको हमें अिस कसौटी पर परखना होगा कि अुसने देहातियोंमें किस हद तक फिरसे किसी कामको शुरू करनेकी वृत्तिका और स्वावलम्बनका विकास किया है।

हलकेवार विकासका यह काम सन् १९४६ में शुरू किया गया था। अनुभवी रचनात्मक काम करनेवालोंकी अेक कमेटीने अेक निश्चित योजना अक्तूबर १९४७ में तैयार की थी। और प्रयोगके तौर पर चुने हुअे ३४ हलकोंमें, जिनमें २८५९ गाँव हैं, वह लागू की गयी थी। चूँकि अिस योजनाका मकसद अेक मानसिक अिन्किलाब (क्रान्ति) पैदा करना है, अिसलिअे अिसे लागू करनेमें अेक नया तरीका काममें लेना पड़ा। ज्यादासे ज्यादा फायदा हासिल करनेके लिअे अलग अलग सरकारी दफ्तरोंके कामोंको अिसके अनुकूल बनाना पड़ा था। अिससे कामकी तरक्की शुरू शुरूमें लाजमी तौर पर धीमी हुअी; और आगे नये विचारवाले कार्यकर्ता जितनी भी ज्यादा तादादमें मिल पायेंगे, अुन पर वह निर्भर करती है। फिर भी अभी तक जो नतीजे आये हैं अुनसे हौसला बढ़ता है। और सरकार समझती है कि अगर कोअी निष्पक्ष आदमी अुन हलकोंमें जाय, जहाँ यह योजना लागू की गयी है, तो अुस पर देहातियोंके मानसिक परिवर्तन (फेरबदल)का असर पड़े बगैर नहीं रहेगा। कार्यकर्ताओंको तालीम देनेके लिअे सरकारने दो कैम्प खोले हैं और जितने भी कार्यकर्ता अिस काममें लगाये गये हैं अुन सबको तालीम देनेकी व्यवस्था की है। अुम्मीद है कि ये कार्यकर्ता जब अपने अपने हलकोंमें जायँगे, तब ज्यादा फायदेमन्द काम कर सकेंगे।

देहातियोंके मानसमें यह योजना चुपचाप जो अिन्किलाब (क्रान्ति) पैदा कर रही है, अुसके अलावा अिन चुने हुअे हलकोंमें सुख-सुविधा बढ़ानेका जो काम किया जा चुका है वह भी काफी अच्छा है।

www.vinoba.in

अक्सर काम तभी पूरे होते हैं, जब देहात खुद नकद रकमके रूपमें या मेहनतके रूपमें अुनमें हिस्सा लेते हैं। अिस बात पर भी जोर डाला जाता है कि बाहरके मुनाफाखोर ठेकेदार वगैरा लोगोंसे काम करानेके बजाय जिन गाँववालोंको अुससे फायदा होता हो, अुन्हींसे वह कराया जाय। अभी तक जो जो सुख-सुविधायें दी गयी हैं अुनकी यादी तो लम्बी है, लेकिन अुनमेंसे खास खास नीचे दी जाती हैं:

आमद-रफ्त

७८० अलग अलग कामोंके लिअे अभी तक जो अन्दाज-पत्रक बने हैं, अुनका लागत खर्च रु० २९,६८,२५५ कूता गया है। १५३ मील नअी सड़कें डाली गयीं हैं। १९ सड़कों और रास्तोंको दुरुस्त किया या अुन्हें सुधारा गया है। ३३ पुलिया, १२ बाँध, और ७ पाँव पुल बनाये गये हैं। दो फुटपाथ बनाये जा चुके हैं और २१ सड़कोंका काम चल रहा है।

पानी

६८२ काम हुअे, जिनका खर्च १३,७७,२१७ कूता जाता है। ९२ नये कुअें खोदे गये और १४३ पुराने कुअें दुरुस्त किये गये। २२१ नये कुओंका काम चल रहा है। २४ पानीकी प्याअू बनाअी गयीं।

सफाअी

गाँवोंमें सफाअी करनेका अेक नियमित कार्यक्रम शुरू किया है। और कअी हलकोंमें कार्यकर्ता और देहाती दोनों अिस काममें हाथ बँटा रहे हैं। ८० नअी टट्टियाँ बनाअी गयीं, जिनमें १६ वर्धाके नमूनेकी हैं। और १२० कूड़ेकी कोठियाँ दी गअी हैं।

लोगोंकी तन्दुरुस्ती

१० अस्पताल अभी शुरू किये गये हैं, जिनमें अेक कोढ़ी अस्पताल है।

शिक्षा

१६६ दिनके मदरसे और १७२ रातके मदरसे शुरू किये गये हैं। ७९ वाचनालय और १९ बड़ी लायब्रेरियाँ शुरू हुअी हैं, जिनकी १८१ शाखायें हैं।

बिजली

बिजली फैलानेमें अिन हलकोंके गाँवोंको पहला मौका दिया गया है। पलदम हलकेके आठ गाँव, कुण्डाके दो, शरमादेवीके दो और तिरुमंगलम हलकेके तीन गाँवोंको अभी तक बिजली दी जा चुकी है। अिन हलकोंमें बिजली फैलानेकी कअी योजनायें मंजूर की जा चुकी हैं और अुन्हें अमलमें लेनेका काम जारी है। जैसे जैसे और जब जब सामान मिलता जायगा, अिस कामको आगे बढ़ाया जायगा।

दूसरे काम

मवेशी पालनके दो विभाग खोल दिये गये हैं। ४६ साँड़ दिये जा चुके हैं। १६ मुर्गी-बतक पालने पोसनेके विभाग शुरू किये गये हैं और ११ रेडियो सेट लगाये गये हैं।

अूपरके बयानसे मालूम होगा कि तारीफके लायक कुछ तो तरक्की हुअी ही है। अिसका बहुतसा हिस्सा तो चालू सालमें ही हुआ है।

यह प्रयोग स्वभावसे ही अैसा है कि थोड़े समयमें अुसके साफ दिखाअी देने वाले नतीजे नहीं मिल सकते।

सरकार अपनी अिस योजनाकी जानकारीसे भरी हुअी और रचनात्मक टीकाका स्वागत करती है और अुसकी गाँवोंको ज्यादा मजबूत, तन्दुरुस्त, अुन्नतिशील और अभी पाअी हुअी आज़ादीके सच्चे वारिस बनानेकी कोशिशमें जनतासे सक्रिय सहयोगकी माँग करती है।

(मद्रास सरकारकी अखबारी यादीसे छोटा किया हुआ।)

(अंग्रेजीसे)

अुरुळीकांचन निसर्गोपचार आश्रम

सब कोअी जानते हैं कि गांधीजीने १९४६ में अुरुळीकांचनमें कुदरती अिलाजका केन्द्र कायम किया था। अुसके बारेमें गांधीजीने २६ मअी, १९४६ के 'हरिजनसेवक' में लिखा था:

"हिन्दुस्तानके देहातमें कुदरती अुपचार कैसे चल सकता है, अुसका कांचन गाँव अेक नमूना बन सकेगा, अिस आशासे और कांचनवासियोंके कहनेसे मैं वहाँ चला गया और मैंने काम शुरू किया। ग्रामवासियोंने मदद की। वहाँ जो जमीन मिलने-वाली थी और मकान बननेवाले थे, सो तो कुछ हो नहीं सका है। देहातियोंने पैसे तो दिये हैं, लेकिन पैसे देनेसे काम नहीं निपटता। लोगोंको जमीन ढूँढ़नी चाहिये, मकान बनानेमें मदद करनी चाहिये। लोगोंका अिस काममें रस लेना पैसे देनेसे ज्यादा जरूरी है। . . . मकान जितनी जल्दी बन सकें, अुतना ही अच्छा है। जब तक मकान नहीं बनते, तब तक सब अुपचार आसानीसे किये नहीं जा सकते। कुछ मरीजोंको अुपचार-गृहमें रखना भी जरूरी हो जाता है।"

यह लिखनेके बाद जमीन मिली और १९४७ के नवम्बर महीनेमें अुपचार-गृहका मकान बनकर तैयार हुआ। अुसे खोलनेका काम श्री काकासाहब कालेलकरने किया। सेवकोंके रहनेका मकान तैयार न होनेसे अुन्हें अुपचार-गृहके मकानमें ही रहना पड़ता था। अिसलिअे काफी तादादमें मरीजोंको अुसमें नहीं रख सकते थे। अब सेवकोंके रहनेका मकान तैयार हो गया है। अिसलिअे ३० जनवरीसे हम मरीजोंको रखना शुरू करेंगे। अभी तक पानीका जरूरी अिन्तजाम नहीं हो पाया है, अिसलिअे अभी ८–१० मरीजोंको ही लेनेका ठहराया गया है। संस्था स्वावलम्बी बने, अिसलिअे फीस लेना तय किया गया है। लेकिन गरीबोंका अिलाज मुफ्त किया जायगा।

अभी कुदरती अिलाजकी तालीम देनेका अिन्तजाम नहीं हो सका है। लेकिन मरीजोंकी सार-सँभाल करनेमें जो तालीम मिले, अुसीसे सन्तोष माननेवाले सेवाभावी कार्यकर्ता किसी संस्थाकी तरफसे आना चाहें और अपने खर्चसे रहें, तो कुछ लोगोंको लिया जा सकता है। अिसके अलावा आश्रम जीवन बितानेकी वृत्तिसे कोअी भाअी या बहन आना चाहें, तो अुन्हें अर्जी देनी चाहिये। अैसे कुछ लोगोंकी जरूरत हमें रहेगी। खास करके बहनोंकी जरूरत रहेगी।

गांधीजी द्वारा तय की हुअी अिस संस्थाके अिलाजके तरीकेकी सीमा अिस तरह है:

खुराकमें फेरबदल, अुपवास, सूर्यस्नान, कटिस्नान, घर्षणस्नान, पूरा स्नान, गरम पानीकी सेंक, भापका स्नान, मिट्टीकी पट्टी, मालिश और गाँवमें पैदा होनेवाली निर्दोष वनस्पतिका अुपयोग।

अुपचार-गृहके नियमों और दूसरी जानकारीके लिअे नीचेके पते पर (जवाबके लिअे टिकट भेजकर) पूछा जाय:

मणिभाअी देसाअी
व्यवस्थापक, निसर्गोपचार आश्रम,
अुरुळीकांचन (पूना होकर)

(गुजरातीसे)

आरोग्यकी कुंजी

लेखक: **गांधीजी**; अनुवादक: **सुशीला नय्यर**

गांधीजीके शब्दोंमें अिस किताबको "विचारपूर्वक पढ़नेवाले पाठकों और अिसमें दिये हुअे नियमोंपर अमल करनेवालोंको आरोग्यकी कुंजी मिल जायगी, और अुन्हें डॉक्टरों तथा वैद्योंकी देहली नहीं तोड़नी पड़ेगी।"

कीमत १० आना डाकखर्च ०–२–०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

२३ जनवरी १९४९

सर्वोदय दिन

शुक्रवार ता० ७–१–'४९को गांधी तत्वज्ञान मन्दिरमें प्रार्थनाके बाद भाषण देते हुअे श्री विनोबाजीने कहा:

आज शुक्रवार है। गांधीजीके प्रयाणका दिन। हिन्दुस्तानमें कभी जगह अिस निमित्त सामुदायिक प्रार्थना होती है। परमात्माकी प्रार्थना रोज होनी चाहिये। परिवार परिवारमें, समूह समूहमें। परन्तु अगर व्यावसायिकोंसे यह रोज नहीं बन पड़ता हो, तो कमसे कम सप्ताहमें अेक बार तो सब मिलकर भगवानका भजन करें। मैं आशा करता हूँ कि आप जब मेरे साथ यहाँ हर रोज प्रार्थनामें शरीक होते हैं, तो मेरे जाने पर हफ्तेमें अेक बार तो जरूर अिकट्ठे हुआ करेंगे।

आज तो मैं और ही कुछ कहने वाला हूँ। अिस माहकी ३० तारीखको गांधीजीका प्रयाण दिन आता है। अुस दिन अुनको गये अेक वर्ष पूरा होता है। अुस दिन सारे देशमें, हर गाँवमें कुछ न कुछ कार्यक्रम होगा। होना जरूरी भी है। महापुरुषोंके स्मरणसे हम जैसे सामान्य जनोंको सहारा मिलता है। अैसे पावन स्मरणोंका जितना भी संग्रह हो सके अच्छा ही है। लेकिन मैं अुस दिवसको गांधी-स्मरण दिन कहनेके बजाय सर्वोदय दिन कहना पसन्द करता हूँ। क्योंकि आखिर ज्यादा लाभ अिसीमें है कि हमारी दृष्टि व्यक्तिके बजाय विचार पर स्थिर हो। कुछ ही रोज पहिले मैं दादू समाजमें गया था। वहाँ मैंने अुन लोगोंसे तब कहा था कि दादूका नाम मिट जाय, भगवानका नाम रहे। यही मैं यहाँ भी कहूँगा। गांधीजी अिस बारेमें विशेष चिन्तित रहते थे। अुनकी बरसगाँठको लोग गांधी जयन्ति कहते थे। गांधीजीने अुन्हें समझाया था कि 'तुम अुसे चरखा जयन्ति कहो, ताकि अेक विचार तुम्हारे समीप रह जाय।' अफ्रीकासे लिखा हुआ अुनका अेक पत्र अभी अभी मेरे देखनेमें आया है। अुसमें वे लिखते हैं—'मेरा नाम मरेगा, तभी मेरा काम बढ़ेगा।' ज्ञानदेवने भगवानसे याचना की है—"रहे न कीरत मेरी, दान यह हरि दीजियो।" ज्ञानेश्वरीमें भी अुन्होंने "लोपहु मम नाम रूप" यह आकांक्षा प्रगट की है। विचार जियें। व्यक्ति तो मरने ही वाला है। अगर अैसा नहीं हुआ और व्यक्ति ही बच रहा, तो हम भ्रममें रहेंगे, संकुचित पंथ बनायेंगे, और समाजके टुकड़े करेंगे। अिस तरह आज ही हिन्दुस्तानमें पाँच सात अवतार हैं और भक्तोंने अुनके जीवनकालमें ही अुनकी पूजा शुरू कर दी है। अिसमें श्रेय नहीं।

गांधीजी खुदको सामान्य मनुष्य मानते थे। मिठास अिसीमें है कि अुन्हें वैसा ही रहने दिया जाय। हमारे लिअे अुसमें बहुत बोध पड़ा है। नाम ही अगर लेना है, तो शरीरको हत्यारेकी गोलीका स्पर्श होते ही गांधीजीके मुखसे जो नाम निकला, वही क्यों न लिया जाय। अिसलिअे अुनके स्मरण-दिनको मैं सर्वोदय दिन कहना चाहता हूँ। वैसे वह दिन अगर क्रियाशील चिंतनमें बिताया जा सके, तो बड़ा काम बन सकता है। अुस रोज कुछ अमली कामकाज होना चाहिये। निष्क्रियता हमारे जीवनमें काफी है। कर्म द्वारा अुपासना—जो सब धर्मोंकी शिक्षा है, लेकिन जिसे हम भूल गये हैं, और जो गांधीजीके जीवनमें समा गयी थी—हमारे जीवनमें अुतरनी चाहिये। अिसलिअे मैं सुझाअूँगा कि अुस रोज सार्वजनिक सफाअीका काम सब लोग करें। सब मेहतर बनें और सारा देश शीशेकी तरह स्वच्छ करें। मेहतरोंको अछूत मानकर हमारे देशने बहुत बड़ा पाप किया है। और देशभरमें अैसी गन्दगी कर रखी है, जिसकी मिसाल दूसरे किसी सभ्य देशमें मिलना सम्भव नहीं है। हमें अिसका प्रायश्चित्त करना चाहिये। छोटे बड़े सब विनम्र बनें। 'नीचसे नीच वही मैं', अिस भावनासे यह सेवाका काम किया जाय।

अुसी तरह अिस देशके लिअे अुत्पादनकी बहुत आवश्यकता है। अिसलिअे यह जरूरी है कि सब लोग चरखा अवश्य कातें। और प्रेमसूत्रमें सबके अन्तःकरण बँध जायँ। जो बहुत ही बीमार हैं अुन्हें अगर छोड़ दिया जाय, तो यह काम अैसा है कि जिसे छोटे बड़े सब सहजमें कर सकते हैं। अिसलिअे अुत्पादन कार्यके तौर पर कताअी हो।

ये दो अमली काम हुअे। अिसके अलावा, सामुदायिक प्रार्थना हो, जिसमें सब जमातोंके लोग शरीक रहें और वहाँ परमेश्वरके नामपर सब हृदय अेकमय और शुद्ध बनें। सम्भव हो तो व्रत रखा जाय, ताकि शुद्धिमें मदद मिले।

अिस कार्यक्रमके साथ साथ सर्वोदयकी भावनाका चिन्तन भी हो। चिन्तन अनेक प्रकारसे हो सकता है। यह शब्द अैसा महान है कि जितनी गहराअीमें पैठना हो, पैठा जा सकता है। हमें विशिष्टोंका अुदय नहीं साधना है, सबका अुदय साधना है। यह हुआ अेक चिन्तन। किसीके हितका दूसरे किसीके हितके साथ विरोध नहीं रह सकता। हित सबके अविरोधी हैं। सात्विक, राजस, तामस भेदोंके अनुसार सुख और सुखमें भेद रह सकता है, पर हितोंमें वैसा नहीं रहता। यह दूसरा चिन्तन। मैं सबमें हूँ और मुझमें सब हैं। अिसलिअे मेरा कर्तव्य है कि मैं सबकी सेवामें शून्य हो जाअूँ। यह तीसरा चिन्तन। अिसमेंसे नतीजा निकलता है कि अिस सबकी साधनाके लिअे सत्यका व्रत लेना जरूरी है, और अिस बातकी फिक्र रखनी भी जरूरी है कि किसी पर हम आक्रमण न करें। हमें संयम सीखना होगा। अिस तरह विविध प्रकारसे सर्वोदय चिन्तनमें वह दिन बीते।

परमेश्वरकी हमारे देशपर बड़ी कृपा है कि अुसने बिलकुल प्राचीन कालसे आजतक असंख्य सत्पुरुष यहाँ भेजे। मानो अुनकी अखण्ड माला ही अुसने जारी रखी। अैसे अभागे समयमें भी हिन्दुस्तान पर अुसने सत्पुरुषोंकी वर्षा की। अगर हम अपने हृदय खुले रखें, तो वे सत्पुरुष हमारे हृदयमें जन्म लेंगे। और हमारा ही रूपान्तर हो जावेगा। भगवान चाहेंगे, तो क्या नहीं होगा?

दा० मूं०

३० जनवरीका व्रत

हम थोड़े ही दिनोंमें पूज्य गांधीजीके पहले वार्षिक अुत्सवके मौके पर अुनकी पवित्र यादमें अपने प्रेम और भक्तिकी श्रद्धांजलि भेंट करनेवाले हैं।

मेरे दिलमें जराभर भी शक नहीं कि ३० जनवरीके दिनको प्रार्थना और अुपवासमें गुजारना चाहिये। पूज्य बापूजी आमतौर पर खास खास दिनों और बड़ी बड़ी घटनाओंको अिसी तरह स्मरण करते थे। वह अीश्वरके अेक भक्त होनेकी वजहसे प्रार्थनामें लीन रहते थे। अुनकी जिन्दगीमें अुपवास और प्रार्थना रूहानी और चरित्रशील होनेके जरिये थे। अिस बातमें, जैसे कि अुनकी और सिखाअी हुअी बातोंमें, हमें अिस मिसालको भी अपनाना चाहिये।

वह बहुत कम बोलते थे, लेकिन करते बहुत कुछ थे। अिसलिअे हमें चाहिये कि हम अपनी जिन्दगीमें अुनके रहनेके तरीकों पर अमल करते हुअे, अपनी खामोश श्रद्धांजलियाँ अुनके चरणोंमें अर्पण करें।

नअी दिल्ली, ११–१–'४९

अमृतकुँवर

www.vinoba.in

३०वीं जनवरी

आश्रमके शुरूके दिनोंमें हमने कओी बार सुबहकी प्रार्थनाके समयमें फेरबदल करके देखा। सवेरे चार बजेसे आगे-पीछे हटाकर हम अुसे सात बजे पर ले आये, फिर भी ठीक नतीजा नहीं आया। आखिर हमने यही फैसला किया कि अिस तरह नहीं चल सकता। चाहे जो मौसम हो, चाहे कैसे भी दूसरे कार्यक्रम आ जायँ, फिर भी हमें चार बजे तो अुठना ही चाहिये, और मुँह हाथ धोकर ४-२० के पहले प्रार्थना शुरू होनी ही चाहिये।

दिल्लीमें जब गांधी-अर्विन समझौतेकी बातचीत चल रही थी, अुस समय गांधीजी कभी कभी रातके बारह-अेक बजे वाअिसरायकी कोठीसे लौटते और डॉ० अन्सारीकी कोठी पर जो नेता लोग अिकट्ठे हुअे थे, अुन्हें अपनी बातचीतका सार कहकर सो जाते थे। अुस समय भी वे सवेरे ४ बजे अुठकर प्रार्थना करना तो कभी नहीं चूकते थे। अुनका कहना था कि प्रार्थनाका समय प्रकृतिको माफिक आता है या नहीं, यह खयाल ही हमें छोड़ देना चाहिये। हमें चार बजे प्रार्थना करनेका आग्रह रखना ही चाहिये। यदि जरूरत हो तो समय पर प्रार्थना करनेके बाद हम सो सकते हैं। प्रकृतिको भी प्रार्थनाके अनुकूल बन जाना चाहिये।

३०वीं जनवरीका दिन भी हमारे लिअे अिसी तरह सबसे पवित्र दिन है। अुस दिन गांधीजीके सिद्धान्तों और राष्ट्र संगठनके कार्यक्रमोंमें विश्वास करनेवाले लोगोंको यह संकल्प करना चाहिये कि जाड़ा हो या गर्मी, हम किसीका भी खयाल न करके 'अेक दूसरेको मिलेंगे ही'। और किसी भी ठहराओी हुओी जगह पर हम सबको अिकट्ठे होना ही चाहिये। अिसके लिअे न बुलावे की जरूरत है, न किसीसे अिजाजत लेनेकी।

सारी हिन्दू संस्कृतिने न जाने कबसे तय किया है कि सिंहस्थ पर्वका मेला बारी बारीसे हरद्वार, अिलाहाबाद, अुज्जैन और नासिक अिन चार जगहों पर होना ही चाहिये। अिस कार्यक्रममें कोओी फर्क कर ही नहीं सकता। जिस तरह हफ्तेके सात दिन अपने नियमके मुताबिक सिलसिलेमें आते रहते हैं, अुसी तरह सिंहस्थके मेले भी सिलसिलेसे जिस जगहकी बारी आती है वहाँ भरते ही हैं। अिसके लिअे किसीको जाहिरात नहीं करनी पड़ती।

अिसी तरह गांधी-मेलेके सम्बन्धमें तय हो जाना चहिये। दिल्लीमें राजघाट, वर्धामें पवनार, अहमदाबादमें साबरमती, नोआखलीमें काजिरखिल, अिलाहाबादमें प्रयाग — अिस तरह चाहे जो पाँच जगहें अेक बार तय कर देनी चाहिये और साथ ही अुनका सिलसिला भी बाँध देना चाहिये। और जहाँ अेक दफे तय हो गया, फिर तो सारी जनताको मजबूतीके साथ संकल्प कर लेना चाहिये कि वह अिस ठहराये हुअे कार्यक्रमका पूरी तरह पालन करेगी। बादमें अुसमें किसीके लिअे अपनी सुविधा असुविधाका विचार करनेकी गुंजायश नहीं हो सकती। आध्यात्मिक मामलोंमें कुदरतकी अड़चनोंको भी महत्त्व नहीं दिया जाना चाहिये।

अिन सालाना मेलोंका कार्यक्रम बहुत लम्बा तो हो ही नहीं सकता। यह कांग्रेस या साहित्य वगैराकी कान्फरेन्सोंका सालाना जलसा तो है ही नहीं, जो अिसके लिअे स्वागत-समिति बनानी पड़े, सभापतिका चुनाव करना पड़े या प्रस्ताव पास करने पड़ें। यह तो हमारे सामुदायिक जीवनका महापर्व होगा, जिसमें चाहे जितनी परिषदें समा सकती हैं। ३० जनवरीको हमें खास दिन मानना चाहिये। और ३१ की शाम तक हम सबको अपना काम पूरा करके बिखर जाना चाहिये। तीन दिनसे ज्यादा लम्बा कार्यक्रम निषिद्ध ही माना जाना चाहिये। अेक बार जिस जगह मेला भरा और कार्यक्रम हुआ कि फिर पाँच बरसके बाद ही वहाँ पर मेला लगना चाहिये। पक्का निश्चय तो मनुष्य समाजका बड़ा भारी धन है। अिसीमेंसे राष्ट्रके चरित्रका निर्माण होता है और समुदायकी आत्मा प्रकट होती है।

क्या हम अिस बरसमें यह निश्चय करेंगे? जहाँ अेक दफे तय हो जाय फिर तो हर साल जनवरी २९, ३० और ३१ अिन तीनों दिनोंके लिअे हमें दूसरा काम नहीं हो सकता। कार्यकर्ता और नेता, भक्त और सेवक सबको यही कहना चाहिये कि ये तीन दिन तो हम अेक दूसरेके सहवासमें ही बितायेंगे। दूसरा जो कुछ भी कार्यक्रम हो, अुसे अिसी कार्यक्रममें समा जाना चाहिये। अिन तीन दिनोंमें हमें गांधीमय हो जाना चाहिये। अगर तीन दिन नहीं, तो ३०वीं जनवरीके दिन तो हममें सिर्फ हृदयका ही लेन-देन होना चाहिये।

काका कालेलकर

नोट: यह काकासाहबकी सूचना है। अिस सम्बन्धमें पूरी चर्चा और विचार तो सर्वोदय समाजकी समिति या राजघाट पर अिकट्ठे होनेवाले कार्यकर्ता ही कर सकेंगे। अुनका फैसला पूरे सोच-विचारके बाद ही होगा।

गांधीजीके नामसे हमें कोओी धार्मिक पंथ या राजनीतिक दल नहीं कायम करना है। न हमें सिर्फ अैसी कुछ जगहोंके सम्बन्धमें, जिनका गांधीजीके नामसे खास सम्बन्ध है, यह भावना पैदा कर देनी है कि वे सदाके लिअे तीर्थकी जगहें हैं और अुनकी महिमा अिस दुनियासे परेकी चीज है। अिसलिअे मैं कार्यकर्ताओंसे बिनती करता हूँ कि जब वे अिस मेलेकी कल्पनाको बढ़ानेके सवाल पर विचार करें, तब ये दो बातें भूल न जायँ।

स्वामी निष्कुलानन्दजीने अपने समयके कुछ तीर्थस्थानोंका हाल लिखा है। अुन्होंने अुन जगहोंको 'नरकके घर' कहा था। अिस पर अुनके साथियोंने अुन्हें समझाया था कि अिन शब्दोंसे दूसरे धर्मके लोगोंके साथ झगड़ा होगा। और अुन्होंने अुन शब्दोंको बदलवा कर अुनकी जगह 'धर्मके घर' यह पाठ रखवाया था। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि समय बीतने पर सब तीर्थ 'नरकके घर' ही बन जाते हैं। अिसलिअे हमें यह खयाल रखना है कि किसी भी जगहको गांधीतीर्थ बननेका मौका न मिले।

सारे हिन्दुस्तानका मेला भरे और अुसकी व्यवस्थाका भार कोओी भी अपने जिम्मे न ले, यह मुझे ठीक नहीं मालूम होता। अिसका मतलब यह हुआ कि मेलेकी सारी व्यवस्थाकी जिम्मेदारी वहाँकी सरकारको अुठानी चाहिये। हमें यह याद रखना चाहिये कि अिससे पैदा होनेवाली मुसीबतोंके कारण ही अलग अलग समाज सेवा दल बने हैं। हमें यह न भूलना चाहिये कि जयपुर कांग्रेसके जलसेके समय बड़ी भारी स्वागत-समिति थी, हवाकी तरह सब जगह जा पहुँचनेवाले गोकुलभाओी भट्ट जैसे अुसके मार्गदर्शक थे, फिर भी अुस कांग्रेस पर अव्यवस्थाका कलंक लगा है। अैसे बड़े बड़े मेलोंकी अच्छी व्यवस्था कर लेना आसान काम नहीं है।

अिसके अलावा, जब अैसे मेलोंका जमाव होता है और वहाँ पर किसी तरहका नियन्त्रण नहीं होता, तो अुन जगहोंमें लोक संस्कृति दिखनेके बजाय जनताके बुरे संस्कार ही दिखाओी देते हैं। गन्दगी, तमाशे, जुआबाजी, मिठाओी और निकम्मी चीजोंकी दुकानें, शोरगुल, भीड़, और धूल, यही वहाँकी विशेषता होती है, जिससे सबकी आँखें खुल जाती हैं और सब हैरान होते हैं। आजकल यह अेक फैशन-सी हो गओी है कि नाच, नाटक, रास वगैराको 'सांस्कृतिक कार्यक्रम' का नाम दिया जाता है। ये कार्यक्रम संस्कारोंको बढ़ाते हैं या विकारोंको, यह तो वे ही जान सकते हैं, जिन्होंने अिन्हें किया हो या देखा हो। मुझे अितना ही कहना है कि ये 'सांस्कृतिक कार्यक्रम' भी अिन मेलोंके खास अंग होते हैं।

अिसलिअे यदि मेरी राय पूछी जाय तो मैं तो अिन मेलों पर नीचे लिखी मर्यादायें लगाना पसन्द करूँगा:

www.vinoba.in

१. अेक ही जगह पर कमसे कम तीस बरसके अन्दर दूसरा मेला न भरे। (सिंहस्थका मेला करीब पचास बरसमें अुसी जगह फिर भरता है।)

२. अिस मेलेमें कोअी सायकल, बैलगाड़ी या घोड़ागाड़ीके सिवा दूसरे किसी सवारीके साधनमें किराया देकर न आवे। मतलब यह है कि रेल, किरायेकी मोटर, टेक्सी, लारी, हवाअी जहाज वगैरासे न आवे। अपनी या अपने किसी मित्रकी मोटरमें कोअी भले ही आ सकता है। कोअी मानव-वाहन जैसे रिक्शा, पालखी वगैरामें न आवे।

३. अगर अिस तरह भी आना हो तो मेलेमें शरीक होनेके लिअे किसीको अितनी दूरसे ही आना चाहिये कि वहाँ पहुँचनेके लिअे अपने घरसे तीन दिनसे ज्यादा वक्त न लगे।

४. मेलेमें कोअी किसी दूसरेका दिया हुआ भोजन न करे, न बाजारकी मिठाअी-चिवड़ा वगैरा खरीदे।

५. मेलेमें यह व्रत पाला जाय कि कहीं भी गन्दगी न की जाय, सफाअी रखी जाय। वहाँ कताअीका कार्यक्रम अवश्य रखा जाय।

६. हमें मेलेको अिसी हदमें सारे हिन्दुस्तानका मानना चाहिये कि ३० जनवरीको मेलेके रूपमें वही जगह हो। यह न माना जाय कि वहाँ सारे हिन्दुस्तानके लोग अिकट्ठे होंगे। खास करके अुस जगहके अिर्दगिर्द ५० मीलके लोग ही अुसमें शरीक होंगे। जहाँ स्थानीय कार्यक्रम बराबर ढंगसे किये जा सकें, वहीं वह मेला हो।

मेरे विचार तो अिस तरह हैं। मैं समझता हूँ कि मेरे विचारों और जनताके संस्कारोंमें बहुत फर्क है। मैंने कहीं पढ़ा है कि "आर्या: अुत्सवप्रिया:"।

मैं राजघाटके मेलेमें शामिल होनेमें असमर्थ हूँ, अिसलिअे मैंने अपने विचार यहाँ जाहिर किये हैं। आखरी फैसला करना तो अुन्हीं विद्वानों पर है, जो राजघाटमें अिकट्ठे होंगे।

बम्बअी, ८-१-'४९ किशोरलाल मश्रुवाला

(गुजरातीसे)

सरकारी महलमें कताअी

श्रीमान् डॉ० कैलाशनाथ काटजू, जो कुछ अर्से तक अुड़ीसाके गवर्नर रहनेके बाद अब पश्चिम बंगालके गवर्नर हैं, कताअी प्रवृत्तिमें बहुत दिलचस्पी रखते हैं। गवर्नरकी हैसियतमें वे अिस कामको बढ़ानेके लिअे जिस तरह अुमंग दिखाते हैं, अुसका भरोसा रखने लायक बयान मेरे पास बहुत दिनोंसे आया हुआ है। अुसे पढ़नेवालोंके आगे पेश करनेके लिअे अुत्सुक होते हुअे भी मैं आज तक नहीं रख सका। आज अुसे देनेमें मुझे खुशी होती है।

श्री० काटजू अुड़ीसामें चन्द महीने ही गवर्नर रहे। फिर भी शहरों और देहात दोनोंमें कताअीके लिअे लोगोंके दिलमें अुमंग पैदा करनेके लिअे वे बहुत मेहनत करते रहे। कटकमें अपने सरकारी महलमें ही अुन्होंने अेक कताअी केन्द्र (मरकज) खोल दिया था, और जब भी कटकमें रहते, खुद अुसमें नियमसे कातते थे। अुस सामूहिक कताअीमें जो चाहे वह जा सकता था। करीब ३० से ४० स्त्री, पुरुष और बच्चे अुसमें रोज शामिल होते थे। कटक शहरमें और भी चार पाँच केन्द्र खोले गये थे। काम धीरे धीरे ही आगे बढ़ता था। नवम्बरसे अप्रैल तक, जब डॉ० काटजूने अुड़ीसाके गाँवोंमें दौरा लगाना शुरू किया, तब वे हर जिलेके भीतरी हिस्सों तक घूम आया करते थे। मोटरसे ७०-८० मीलका चक्कर लगाकर हररोज पाँच छह गाँवोंकी मुलाकात लेते थे। हर जगह अेक साथ बैठकर कातनेका कार्यक्रम जरूर रखा जाता था। और अुसमें वे खुद भी शरीक होते थे। अिस तरह अुड़ीसाके बहुतसे हिस्सोंमें अुन्होंने कताअीके थाने कायम किये थे। चन्देके लिअे कुछ रकम वे खुद देते, और अपना काता हुआ सूत और खुदको मिले हुअे मानपत्रोंको नीलाम करके जो कीमत आती थी, वह भी अुसमें देकर रकम जमा करनेमें मदद करते थे। यह काम अुनका अेक शौक ही था, और अुसे वे बहुत ही पसन्द करते थे।

जब वे कलकत्ता गये, तब वहाँ चरखेकी भावना बिलकुल नहीं थी। बेशक सोदपुरका बड़ा थाना तो था ही। लेकिन जबसे बापूजी नोआखाली गये, तबसे सतीशबाबू और अुनके साथ काम करनेवालोंका सारा ध्यान नोआखालीके काममें लग गया था, और सोदपुरका काम कुछ ढीला पड़ गया था। डॉ० काटजू कलकत्तामें बिलकुल नये थे। अिसलिअे वे अपने सरकारी मकानमें ही सिर्फ पहला थाना बना सके। वहाँ पर हर गुरुवारको बड़े घरोंकी कुछ स्त्रियाँ पहले भी जमा होती थीं और शरणार्थियोंके लिअे कपड़े बुननेका काम करती थीं। यह काम करीब करीब पूरा हो गया था और वे सोचती थीं कि अब गुरुवारका मिलना बन्द कर दिया जाय। डॉ० काटजूने कताअी शुरू करनेकी बात अुनके सामने रखी। वह मंजूर हुअी और थाना चलता रहा। बिचले दर्जेकी ४०-५० बहनें, जिनमें कुछ तो बड़े बड़े अफसरोंके घरकी थीं, हर गुरुवारको आने लगीं और कताअी सीखने लगीं। अगस्तके आखिर तक कलकत्ताके अलग अलग भागोंमें पाँच थाने और खोले गये। डॉ० काटजूने अिस कामके लिअे पाँच सौ रुपये चन्देमें दिये, और खुद बहनोंने २२०० रुपये लोगोंसे अिकट्ठे किये। कताअीको लोकप्रिय बनानेके लिअे अेक तजवीज बनाअी गअी, और महिलाओंने अुसे अमलमें लानेमें बड़ी चतुराअी दिखाअी। कुछ बहनोंने तो बहुत ज्यादा अुमंगसे काम किया। सत्तर चरखे तो अुनके पास थे हीं, और कुछ सौके लिअे आर्डर दिया गया।

डॉ० काटजूने सोच रखा था कि बरसातका मौसम पूरा होने पर अुड़ीसाकी तरह पश्चिम बंगालमें भी वे अपना दौरा शुरू कर देंगे और रोज ३-४ घंटे देहातमें घूमकर वहाँकी देहाती संस्थायें, स्कूल, हरिजन बस्तियाँ, दवाखाने वगैरा देखेंगे; हर जगह देहातियोंकी सभा करेंगे और हो सका तो वहाँ पर सामूहिक कताअीका कार्यक्रम रखकर खुद कातनेमें भी शरीक होंगे।

यह सितम्बरके शुरू तकका बयान है। बादमें काटजू साहबके कामका मुझे दूसरा भी अेक बयान अक्तूबरके बीचमें मिला है, जिसमें अिससे आगेका जिक्र है। अक्तूबरके बीच तक सरकारी महलमें जो थाना चल रहा था, अुसमें ज्यादा कातनेवाले दाखिल हुअे थे। अितना ही नहीं, अिसीके साथ कलकत्ताकी अलग अलग जगहोंमें छह दूसरे थाने खोलनेमें अुन्होंने मदद की थी। जो महिलायें अिस कामको सँभालती थीं, अुन्होंने २७ सितम्बरसे २ अक्तूबर तक गांधी-जयन्ती मनानेका अेक कार्यक्रम तैयार किया था। अिन थानोंने सामूहिक कताअीके बहुतसे जलसे किये, जिनमेंसे तीनमें डॉ० काटजूने खुद हिस्सा लिया, और २००-३०० स्त्री, पुरुष और बच्चोंके साथ घंटेभर बैठकर कातनेका आनन्द लूटा। मुख्य कार्यक्रम सरकारी महलमें २ अक्तूबरके दिन हुआ। वहाँ सिर्फ कताअी ही नहीं की गयी, बल्कि कताअीसे सम्बन्ध रखनेवाली सारी क्रियायें (ओटाअी, तुनाअी वगैरा) भी की गअी थीं। वह कार्यक्रम बहुत ही सफल हुआ। हर जातके और हर अुम्रके ७००से ज्यादा शख्सोंने अिस पवित्र करनेवाली मेहनतमें हाथ बँटाया था। और, जैसा कि डॉ० काटजूने अपने भाषणमें बताया, कातने वालोंने अिस कामसे सिर्फ अपनेको ही पवित्र नहीं किया, बल्कि अिस सरकारी महलके आजतक के पापोंको धोकर अुसे भी पाक कर दिया है।

सर्वोदयके तामीरी (रचनात्मक) काममें राज या सूबेका सबसे बड़ा हाकिम भी किस तरह मदद कर सकता है, अिसे दिखानेके लिअे मैं यह बयान यहाँ दे रहा हूँ।

बम्बअी, १-१-'४९ किशोरलाल मश्रुवाला

काम ज्यादा बात कम

यह तो आमतौर पर मान लिया गया है कि हमें ३० जनवरीका दिन जिस ढंगसे मनाना चाहिये कि अुससे बापूकी विचारधारा और प्रोग्राम ज्यादासे ज्यादा आगे बढ़े। लेकिन जब अुस दिनको मनानेकी तफसीलों पर हम विचार करते हैं, तो हमारे सामने सच्ची कठिनाअी पेश होती है।

मैं पिछले कुछ समयसे यह महसूस कर रहा हूँ कि हम बातचीत और चर्चाओंमें जरूरतसे ज्यादा समय खर्च कर रहे हैं। जिसका नतीजा यह होता है कि हमारे पास काम करनेके लिअे बहुत कम समय बचता है या बिलकुल नहीं बचता। मैं यह भी महसूस करता रहा हूँ कि बापूको प्यार करते हुअे और अुन्हें अपना नेता मानते हुअे भी हम अुनसे दूर हटते जा रहे हैं।

जिसलिअे मेरे विचारसे जिस दिनको अुचित ढंगसे मनानेके लिअे सबसे पहली जरूरत यह है कि कोअी सभायें न की जायँ, भाषण न दिये जायँ, योजनाओं पर बहस न की जाय और किसी तरहके प्रदर्शन न किये जायँ। और बापूको प्यार करनेवाला और अुनकी तारीफ करनेवाला हर आदमी अपना समय और ताकत शरीरश्रमकी या अुसी तरहकी कोअी सेवा करनेके लिअे बचावे। हर व्यक्ति यह तय कर सकता है कि वह बढ़िया ढंगसे कौनसा काम कर सकेगा।

जो जा सकते हों, वे सिर्फ दो या तीन आदमियोंकी टुकड़ी बनाकर गाँवोंमें जायँ और ज्यादासे ज्यादा गाँवोंमें पहुँचनेकी कोशिश करें। वहाँ पहुँचकर पूरा दिन गाँववालोंके साथ बितायें। वहाँ गाँवकी सफाअी, कताअी वगैराका प्रोग्राम रखा जा सकता है। जानेवाले लोग गाँववालोंके साथ प्रार्थना कर सकते हैं, तुलसी रामायण पढ़कर अुन्हें सुना सकते हैं, गाँववालोंको बापूके जीवन, अुनकी विचारधारा और प्रोग्रामके बारेमें समझा सकते हैं, और गाँववालों और अुनके जीवनके साथ गहरा सम्बन्ध कायम करनेकी कोशिश कर सकते हैं। अगर यह प्रोग्राम और यह निगाह लेकर हम गाँवोंमें जायँगे, तो हम गाँववालोंकी रोजानाकी कठिनाअियोंको समझ सकेंगे। आज आम लोग यह चाहते हैं कि अुनके रहन-सहनकी हालतोंमें सुधार हो और अुस सरकारके साथ अुनका अिन्सानियतका जिन्दा ताल्लुक हो, जिसके बारेमें अुनसे कहा जाता है कि वे अुसे अपनी सरकार और अपना भला करनेवाली सरकार मानें।

अहमदाबाद, २६-१२-'४८ **जी० वी० मावळंकर**
(अंग्रेजीसे)

भंगी काम

धुलियासे लिखे अपने अेक पत्रमें श्री विनोबा सूचना देते हैं कि धुलियाके रचनात्मक कार्यकर्ताओंने हर महीनेकी ३० तारीखको शहरमें भंगी काम करनेका तय कर लिया है। धुलियाके पाखाने बहुत ही बुरी हालतमें हैं। कार्यकर्ताओंने यह फैसला कर लिया है कि हर महीनेकी ३० तारीखको वे खुद पाखाने साफ करेंगे। कुछ स्वयंसेवकोंने, जिनमें बूढ़े ब्राह्मण भी हैं, अिस कामके लिअे अपने नाम लिखा दिये हैं। धुलिया पश्चिम खानदेशका मुख्य शहर है। अुसकी आबादी लगभग ७५००० है। जलगाँव पूर्व खानदेशका मुख्य शहर है। वह भी सफाअीमें धुलिया जैसा ही है। वहाँके रचनात्मक कार्यकर्ताओंने भी महीनेमें दो बार — १५ और ३० तारीखको — यह काम करनेका निश्चय कर लिया है। श्री विनोबाका खयाल है कि महाराष्ट्रके दूसरे शहरोंमें भी अिस तरहके प्रोग्राम पर विचार किया जा रहा है। महाराष्ट्रके कार्यकर्ता अिस ठोस कामके लिअे बधाअीके पात्र हैं, और मुझे आशा है कि दूसरी जगहके लोग भी अिसकी नकल करेंगे। जैसा कि विनोबाजी लिखते हैं, अिससे सचमुच अस्पृश्यता मिट जायगी।

बम्बअी, १८-१-'४९ **कि० मशरूवाला**
(अंग्रेजीसे)

जयपुर कांग्रेस

मैं यह बात भूला नहीं था कि मैंने जयपुरके सालाना जलसेके बाद कांग्रेसका कोअी जिक्र नहीं किया था। मैं अुसके खास खास ठहरावोंको मूल रूपमें छापना चाहता था। लेकिन वे जलसा हो जानेके बहुत दिनों बाद मुझे मिले। 'सन्देश', 'साम्प्रदायिकता' (फिरकाबन्दी), और 'प्रजासेवकोंके चाल चलनका दर्जा' नामके ठहराव हमारी बड़ी राष्ट्रीय संस्था कांग्रेसके लायक ही हैं। वे बिलकुल साफ हैं। वे हमारी कामयाबियों और निराशाओं दोनोंको बताते हैं। निराशाओंके दो कारण हैं: आजकी हालतें और हमारी अपनी कमियाँ। जयपुरका 'सन्देश' नामका ठहराव लगभग मूल रूपमें अिसी अंकमें दूसरी जगह छपे 'सर्वोदय दिनके लिअे कांग्रेसका सन्देश' लेखमें दिया गया है। आर्थिक प्रोग्रामका ठहराव बड़ा महत्व रखता है। मैं अखिल भारत चरखा संघ और अखिल भारत ग्रामोद्योग संघके विचार अिस बारेमें नहीं जानता, लेकिन मुझे डर है कि वे अिसे मंजूर नहीं करेंगे। जैसा कि श्री जे० सी० कुमारप्पाने हालमें ही अिस परचेके कालमोंमें कहा है, यह अुनकी निगाहमें और हममेंसे अुनके जैसे विचार रखनेवालोंकी निगाहमें अेक गलत रास्ता है। अगर आप चाहें तो अिसे अिन दोनों संघोंके रास्तेसे अुलटा रास्ता कह सकते हैं। मैंने अिस ठहरावको महत्वका कहा है, क्योंकि वह खादी ग्रामोद्योगके रास्ते और कांग्रेसके रास्तेके बीच अलग करनेवाली लकीर खींचता है। ठहरावोंमें अिस बातका कोअी अिशारा नहीं है कि कांग्रेस तालीमके सवाल पर क्या सोचती है। मेरे विचारसे तालीमके बारेमें आज जो नीति बनाअी गअी है और जिस पर अमल किया जाता है, अुसे कांग्रेसको सावधानीसे जाँचनेकी जरूरत है। मुझे यह जान कर अचरज और निराशा हुअी कि कांग्रेसने आम लोगोंसे अुनकी कुछ सबसे बड़ी शिकायतों — जैसे, कण्ट्रोल, रेशन व्यवस्था, अूँचे भाव, दबानेके लिअे किया जानेवाला हुकूमतका अिस्तेमाल, वगैरा — के बारेमें कुछ नहीं कहा। कांग्रेसको यह जानना चाहिये कि हालमें ही बहुतसी हाअीकोर्टोंने सरकारोंकी सख्त नुक्ताचीनी की है। ये कुछ अैसे विषय हैं, जिन पर कांग्रेसके विचार जानकर जनताको खुशी होती।

मुझे आशा है कि कांग्रेस हाअी कमाण्ड आगे अिन बातोंके बारेमें देशको साफ़ रास्ता बतायेगी।

अिस बीच हम कांग्रेसकी "राष्ट्रकी अलग अलग जातियोंमें फिरसे सद्‌भावना, शान्ति और मेल-मिलाप कायम करनेके लिअे बड़ीसे बड़ी कोशिश करने" की पुकारको पूरे दिलसे सुनें व अुस पर अमल करें, और याद रखें कि "अधूरे अुपायों और मौका देखकर अख्तियार किये जानेवाले तरीकोंसे संकट दूर नहीं होते या मुश्किलें हल नहीं होतीं। मुसीबतोंके असल कारणोंको दूर करने और हमेशा अूँचा नैतिक दरजा कायम रखनेसे ही वे पूरी तरह दूर होते हैं।"

बम्बअी, १४-१-'४९ **किशोरलाल मशरूवाला**
(अंग्रेजीसे)

अेक घण्टेका मौन

अेक भाअी लिखते हैं: "मुझे खुशी है कि सर्वोदय दिवस मनानेमें व्याख्यान देनेकी कांग्रेसने कतअी मनाही कर दी है। हर शख्सको अपने खुदके माने हुअे अनुशासनके नाते अुस दिन कमसे कम अेक घण्टा मौन रखना चाहिये। हम सब जानते हैं कि बापू मौन रखनेको कितना महत्व देते थे।" यह सुझाव अुम्दा है। मैं तो यह भी कहूँगा कि अगर अुस दिन अेक घण्टे पहले रेडियोका कार्यक्रम भी बन्द कर दिया जाय, तो अुससे कानोंको बहुत आराम मिलेगा।

बम्बअी, १४-१-'४९ **कि० मशरूवाला**
(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

गांधी स्मारक संग्रह

(सच्चा श्राद्ध)

जब कभी मैं मित्रोंको या अपने विद्यार्थियोंको आकाशके तारोंका परिचय कराता था, तब पहले पश्चिमके तारों पर ध्यान देता था। कारण स्पष्ट है। वे देखते ही देखते अस्त हो जाते थे। पूरबके तारोंकी वैसी चिन्ता नहीं थी। अुन्हें हम बादमें भी देख सकते थे। अगर कुछ देर भी होती, तो भी अूपर आने पर अच्छी तरहसे अुनके दर्शन हो सकते थे।

महात्मा गांधीकी यादगारें अिकट्ठी करनेमें यही कानून होना चाहिये। जो लोग वृद्ध हैं, अुनकी स्मृति देखते देखते क्षीण हो जानेकी सम्भावना रहती है। अुनकी याददाश्त टिकने पर बहुत भरोसा नहीं रखा जा सकता है। अिसलिअे अुनके पाससे जो कुछ भी पानेकी आशा हो, अुसे झट ही ले लेना चाहिये।

हम लोगोंमें अैतिहासिक मसाला शुद्ध रूपमें अिकट्ठा करनेकी आदत कम है। जब चरित्र लिखने बैठते हैं, तब चरित्रकी जगह अेक माहात्म्य लिखकर ही अुठते हैं। सच्ची घटना या वाक़येको छोड़कर हम अपनी अपनी कल्पनासे काम लेते हैं, और मनगढ़न्त मूर्ति खड़ी कर देते हैं। हिन्दुस्तानका अितिहास लिखनेवालोंकी कठिनाअियाँ जो जानते हैं, वे अिस बातकी दुःखके साथ गवाही देंगे।

हमारे देशने अपने अिस परम्परागत दोषको दूर करनेका संकल्प किया है। और अुसका प्रारम्भ गांधी-युगसे ही हो रहा है। गांधीजी हमारे राष्ट्र-पुरुष हैं और युग पुरुष भी हैं। अुनके जीवनकी और अुनकी मानव-जीवन व्यापी प्रवृत्तियोंकी छोटी मोटी सब घटनायें अिकट्ठी करनेकी मेहनत अनेकोंने की है और आअिन्दा भी करेंगे। अैसोंकी मेहनतको अिकट्ठा करके अेक विशाल गांधी स्मारक संग्रह तैयार करनेका काम राष्ट्रकी गांधी स्मारक निधिने मुझे सुपुर्द किया है। बहुत ही नम्रताके साथ यह पवित्र काम मैंने अपने सिर लिया है। और अिसके लिअे कुछ समय तक मैं सारे देशका दौरा भी करनेवाला हूँ।

गांधी स्मारक निधिकी ओरसे जो स्थान मुकर्रर होगा — फिर वह दिल्ली हो, सेवाग्राम हो, साबरमती हो या और कोअी दूसरा हो — वहाँ पर अेक विशाल संग्रहालय खड़ा किया जायेगा। तब तक गांधीजीके साथ सम्बन्ध रखनेवाली सब चीजोंका और साहित्यका संग्रह हिफाजतसे रखनेकी और लोगोंको दिखानेकी व्यवस्था बम्बअीमें की गअी है। बम्बअीके नगर-भवन (टाअुन हाल) में रोयल अेशियाटिक सोसायटीका जो बड़ा भारी पुस्तकालय है, अुसीके साथ गांधी स्मारक संग्रहका कार्यालय रहेगा। और गांधीजीका लिखा हुआ साहित्य, गांधीजीके बारेमें औरोंका लिखा हुआ साहित्य, असली या अनुवादके रूपमें — फिर वह दुनियाकी किसी भी भाषामें हो — वहाँ पर अिकट्ठा करके रखा जायगा।

गांधीजीके फोटो, अुनके हस्ताक्षर, अुनकी अिस्तेमाल की हुअी चीजें — सबके फ़ोटो वहाँ रखे जायेंगे और आहिस्ता आहिस्ता अुनके आल्बम बनाकर लोगोंके लिअे अुपलब्ध करनेकी कोशिश की जायेगी।

गांधीजीकी जो भी चीजें मिलेंगी, सब बम्बअीके प्रिन्स ऑफ वेल्स म्यूजियममें हिफाजतसे रखनेका प्रबन्ध भी हुआ है। थोड़े ही दिनोंमें सब चीजें अिस तरहसे वहाँ रखी जायँगी कि देश देशान्तरके लोग वहाँ जाकर अुन्हें आसानीसे देख सकें। संग्रहालयोंका भी अपना अेक विज्ञान या शास्त्र होता है। रशियन लोगोंने मास्कोमें जो लेनिन-संग्रहालय खड़ा किया है, वह संग्रहालयोंके लिअे अेक सुन्दर आदर्श है। अमेरिकाने वर्षोंकी मेहनतसे और निष्ठावान लोगोंके पुरुषार्थसे अेक लिन्कन-म्यूजियम तैयार किया है, जिसे देखकर लोग अचरज करने लगते हैं। गांधी संग्रहालयके द्वारा हमें वैसा ही अेक स्वतंत्र नमूना दुनियाके सामने रखना चाहिये। कुछ लोग अिसी काममें अपना सारा समय देंगे। लेकिन सहयोग तो सारे हिन्दुस्तानियों का ही होना चाहिये।

जिनके पास स्मारक वस्तुअें होती हैं, वे पवित्र भावनाके कारण अुन्हें छोड़ना पसन्द नहीं करते। लेकिन आज तकका अनुभव यह है कि अैसी वस्तुओंका संग्रह व्यक्तियोंके हाथमें सुरक्षित या सलामत नहीं रहता। पुराने लोग महत्वकी वस्तुओंका संग्रह मन्दिरोंके जरिये करते आये हैं। लेकिन हमें मूर्ति पूजाकी वृत्तिको बढ़ावा नहीं देना है। हम नहीं चाहते हैं कि पवित्रसे पवित्र भावनाओंका रूपान्तर वस्तु-पूजामें हो जाय। वस्तु-संग्रह अलग चीज है और वस्तु-पूजा अलग। वस्तु-संग्रहसे अैतिहासिक दृष्टि बढ़ती है, सत्यकी अुपासना में मदद मिलती है। अिससे अुलटे वस्तु-पूजासे भावनाअें संकुचित हो जाती हैं और विचारोंमें बिगाड़ पैदा होनेकी सम्भावना रहती है।

हिन्दुस्तानके सब लोगोंसे मेरी अपील है कि अिस राष्ट्रीय काममें मेरी सहायता करें। जिन लोगोंके पास गांधीजीसे सम्बन्ध रखनेवाली कोअी भी महत्वकी चीज हो, अुसे वे **"गांधी स्मारक संग्रह", टाअुन हाल, बम्बअी १.** के पते पर भेज दें। अथवा अुसके बारेमें ब्योरेवार जानकारी, हो सके तो फोटोके साथ, अुसी पते पर मेरे नाम भेज दें, ताकि यथासमय अुस चीजका मैं संग्रह कर सकूँ। जिनको अैसी चीजें अपने ही पास रखनी हैं, अुनको भी कमसे कम देशको अुसकी जानकारी तो तुरन्त दे देनी चाहिये कि फलाँ चीज अुनके पास है। सत्यकी रक्षाके लिअे यह बहुत ही जरूरी है। चीजें नोट (registration) हो जानेसे आगेके धोखेसे हम बच जायेंगे।

यह भी सोचा गया है कि हिन्दुस्तानमें कमसे कम २०-२५ अैसे पुस्तकालय हों, जिनमें गांधीजीका समूचा साहित्य पढ़नेवालोंको मिल सके। हिन्दुस्तानके बाहर भी प्रधान देशोंमें अैसे गांधी पुस्तकालय रखने चाहियें, जहाँ पर गांधीजीके अुद्धारक सिद्धान्तोंका गहरा अध्ययन हो सके। महत्वकी पुस्तकें दुष्प्राप्य होनेके पहले ही अुनका काफी संख्यामें संग्रह करना चाहिये और अुन्हें अिन गांधी पुस्तकालयोंमें बाँट देना चाहिये। ग्रन्थकारोंसे, प्रकाशकोंसे और दूसरे सभी लोगोंसे मैं बिनती करता हूँ कि गांधी साहित्यकी जितनी भी प्रतियाँ वे भेज सकते हैं, हमारे पास भेज दें। फिलहाल कमसे कम ५० सेटका संग्रह करना है। अपने अपने प्रकाशनोंकी जानकारी तो हमें दे ही दें।

पुस्तकालय विज्ञानके विज्ञ (माहिर) और गांधी साहित्यके लम्बे समयके अभ्यासी श्री रामकृष्ण प्रभुने अिस काममें मेरी सहायता करनेका वचन दिया है। और अुनकी अिस काम पर नियुक्ति भी हो चुकी है।

काका कालेलकर

विषय-सूची

		पृष्ठ
सर्वोदय दिनके लिअे कांग्रेसका सन्देश	...	३८९
रहबर	...	३९०
मद्रास सरकारकी हलकेवार विकास-योजना	...	३९०
अुरुलीकांचन निसर्गोपचार आश्रम	... मणिभाअी देसाअी	३९१
सर्वोदय दिन	... दा० मूं०	३९२
३० जनवरीका व्रत	... अमृतकुँवर	३९२
३०वीं जनवरी	... काका कालेलकर	३९३
सरकारी महलमें कताअी	... किशोरलाल मशरूवाला	३९४
काम ज्यादा बात कम	... जी० वी० मावलंकर	३९५
जयपुर कांग्रेस	... किशोरलाल मशरूवाला	३९५
गांधी स्मारक संग्रह	... काका कालेलकर	३९६
टिप्पणी		
भंगी काम	... कि० मशरूवाला	३९५
अेक घण्टेका मौन	... कि० मशरूवाला	३९५

www.vinoba.in